ोगाकुचरावै॥वृंदाबननबासख
ेवादिकचावै॥स्वर्गामृतुपातालमै
ंदाबननसोजोन ञ्जवरनबिराजतके
ीतहांचलतमाधुरीपोन।येकरैन
नस्यामकु डिजमुनापर आये वैयर
पेयारीध्यानमाथजनकौसुधिहपाये
दिनहरिश्रीरोसजेकोकरिसकेबय
जादिनकी छिबरूपस्कोरिकामर

कानन ५ नानातरु बिहंगडारपैकरत
गुंजारीञ्जाजैसीफुलवाटिकाञ्जौरबिधि
नहिंसुधारी पूरनमासीसरदकी
छिटकचांदनीरैनि व्रजबालाकैका
रनैश्रीकृष्णबजाईबैन ६ कोइबना
वतमीरहाथञ्जौरलेञ्जाई करतलगो
ईनारिचूनलोयालेञ्जाई लेमावोड्रा
सीसपैलियाचीरकटिबेठ मिसीघा

रपाजलदांतलपे
करनफूलघरिनाककानोनथडी
ली॥कोईछुडतहीनाजछाजहाथन
चाली॥पावनपैरीनोगारीहाथमेरू
फोल॥श्रीकृष्णबजाईबासुरीसबनेई
तरसंतोल॥८सुखिदुखिनहीसरीगो
पिकाञ्आनंदछाई॥धामकामकुलछाडि
पासमोहनकैधाई॥कमावदरोकीगोपि

काजिनतालादीयेजुडाय॥ ततथ्यातथ
ग्रोगोपालकोवासबकैपेलीआय॥७॥
अवतदेषीनारिसाममनमेमुसकाये
यो बिनाबनायोसाआजकेसोबन
आये॥ येमोमैऐसीरचीजिनसुरतनही
तनमांहिं॥ मैइनसोंअतररखूयाचरमम
नातीनाहिं॥२०॥ मिलीगोपिकाआयसा
मऐसेपुरमाई॥ तुमसुधिवुधितदीसरीर

घोटकोबिजियापाई॥कैसैकापडापह
रियाकैसैकियोसिंगार॥चात्रामूत्नो
लीनईतुमकहोकैसेब्रजनारि॥११॥
करदरसनघनस्यामगोपिकासोधीश्रा
ई॥श्रापतोबदननिहारनोतमनमोसंका
ई॥कासोहैकापहरियाकापडहारसिंगा
र॥लेदरपनघनस्यामसोंसबलीनोबद
नसुधारि॥१२॥करिदरसनघनस्यामगोपि

का बिनती कीनी ॥ दोउ कर लीना जो
डि नारि बोली रैगनीनी ॥ तरसततर
सत पाइयो प्रभु आज घडी आनंद ॥
हमरा मनकी काम नासो पूरो गोकल
चंद ॥ २ ॥ बोले कृष्ण मुरारे सुंकल मन
मांहि पिछानो ॥ नकु जोगा संमार नांहि
को मोसे छानो ॥ तुम मोकौ औसे नजो
डुडजा कुल लाज ॥ सो मो तुमरी का

मनासोसोपूरोग्राजि॥४॥प्रेमबैनसुन
नारिज्ञोतनुरछायो॥जपतपतीरथद
नकीयोजाकोफलपायो॥गोपीदासीच
रनकीप्रभुतुमगोपिकेनाथकरनीहै
यसोहीकरोफिरवीतजावतरात॥५॥ ४२
सुनकामनिकोबचनकृशिमोहनमुस
कायो॥रासकरनकीभूमिनाथदेखणकू
धायो॥भूमिबराबरदेखकै

ही हरिप्याला मूसा बिलंबी न हीत है
गाडे नंदकवारे ॥२६॥ गाडे नंदकवार
नारि सोयो फुरमाई रास करन की मू
नि गोपिका है ॥ पाई ॥ बिचौमै गाडे क्र
ष्ण जी प्यारी लई बुलाय ॥ मंडल पूर्यो
रास को कृष्ण हाथ सु हाथ जुडाय ॥२७॥
रास स्थल नोदै पिक कृष्ण मन मांहि बिचा
री ॥ बिना गाजे बिनु बाजन रास ना लागत

दिपारी॥सुरगलोकसुदेवतागणपार
येपगाय॥कृष्णचरनपरनामकरिवै
गाढेसाजमिलाय॥१८॥ सबबाजासिर
मोडस्यांमकीबंसीबाजै बेणतमुरतार
मंजरीबाक्योगाजे मृदगबाजततालद
फ सारंगीसैतार फाजमजीरादस्नी
सैनाईनूआर १९ कृष्णरासमुनिको
नशिवसनकादिकादिक [illegible]

बिप्रसुकदेवमुनीदरसनकूआए॥ ले
देवनदेवाणनाजेंहांछायरह्योआका
सं॥ चंदरमांचाल्योनहीवोपडोरह्यो
छमास॥२०॥ देषकष्णकोरूपनारि
मनमेंहरषावे॥ वानारीकोनाम्
संपुत्रसरावे॥ चंदबदनमगलोचनी
दुर्गासिजीअपार॥ बडीचतुरगाजगा
मिनीजाकैपापापलफुणकारती॥२१

रासतीप्यारीदेषिकृष्णपूँछ्याआपदीनी॥तु
मकरोपियारीरासटीलछ्यबकैसेकीनी
छिमछिमघमघमघूघरापगापामेंकूण
कोरा॥छतीसुबाजावेजैताकोअ्रतनपा
रास्रा॥कृष्णरासकेमाहिछिमाछिमपा
वनगावै॥नैनवैनमुसकायहाथसूत्ताव
बतावै॥फूदीदेवतरासमैराधाकृष्णमहे
ता॥जपतपतीरथदानकौवैकियोद्दियो

फललेत ॥ २३ ॥ मगआदिचौपावैकृष्णस
बकौबसिकीना ॥ गरुडआदिछाजीव
चित्तसबकोहरलीना ॥ मीनमछजल
जंतुसबकोहरलीना।येचित्रसमान
जमुनाजीकेतीररही जबसबमिलगाई
तान ॥ २४ ॥ मूर्तीपानीवेदपारकोपावतम
ही ॥ प्रेमलक्षआधीननचौगोपिनकेमाहि
निरमततनाचतकृष्णजीप्यारीसूपसिगा

रायेकनादसबकोबध्योसाजकेतफुनक
रारूपादेमकृष्णकोरासटछ्योआनंदनहि
मावै॥अपनेअपनेपुण्यकृष्णकीनेटचद
वेअंतरचदनअरगाजाणारीकृष्णलाणप
तीनपोनकाजोरसोवाबासरहीननछा
याऱद्धानिरफलकेफलआयओरछिब
बनेकाईसबफलसदासमानचिमकितेआ
णामारूजदमकतिहिसजोतितारनकीन

जै॥सीतलमंदसुगंधपवनत्रिबीधक
जै॥कलवृछवृछनललजतंजधामसु
स्नानसुतातीरथलजकृष्णजनम
रास॥२७॥लजकपिनसुदेवलजम
सुरनारि॥लजमोरमा राजलजचं
रिषारी॥कंचिननारिकंकरलजजैल
मलषिमत॥गोपनसुमुनीलजैकरल
सावहन॥२८॥पूलपानफलनारस

धरनिपैआय।पानीकोसंपतिमिलैवोजैसे
नैजाय।२८।शिवसारदशुकदेवमुनीश्रत
तनचारै।करकंचनकोथालआरतीब्रह्म
उचारै।रिणकातृणकाभूमिकाहरमतहै
मनमाहि।जातिपातिकुलबंधुमेहमजूद
जोनाहि।२९।गहणारीकीबांहस्यामसन
मेमुसकावै।तुमबिनयहआनंदपियारीको
नबतावै।नीरीनागरपानकी[illegible]

देत स्यांम सषी कों नांव करि प्रनुपीपवा
टि कर लेत ॥२२॥ राधे कृस्न मुरार जु गालछि
ब मन कों मोहे ॥ परमानंद किसोर सदा सुष
देवु मस्यो वै ॥ घनदामिन जोडो बन्यो गल
बाँहि रही लीपटाय ॥ देवजणावत चाकरी
सब हरष्य पुष्प बरषाय ॥२३॥ भक्तबछल
प्रीतपाल कृस्न मन माहि बिचारी ॥ मै राधेके
पासि बुरा मांनत सब नारी ॥ छिन मांहीमा

यारचीहरिजनतिबधावणमानात्रणहो
णीलीलाकरीजयेयेकनारदोकान्ह॥
ऽशानाहीहुयोनहिहोयनिरतवोत्रोछे
नाही।कोटचंद्रमाभानननत्यवंदाबनमां
ही।येकयेकमोत्र्याारीनचतकमकर
जोडिश्रणगिणतीगिणतीनाहीपणक
वतिहैसोकोडिरूध।नहीऽसोषपाऽनही
सुषकेरनपावै।टूटतहैजुजबंदहिोऽऽं।

नंदनहिमावे सूमदूमत्रानंदलयोत्र
गत्रामुसकान। गोमधरत्रानंदकोके
लाकरैतबषान॥३५॥ इतिश्रीप्रथमस
मस्तमालाग्रं। दोकरकूल्लतिहारगोपि
कानंदछकिन्नारी॥ हसरसीससारत्रै
रलादजीनारी॥ स्योत्रह्मामुनिदेवताग
नगावैतवेदपुरान। सोहमपेदोदोषडे
जितन्हायोत्रडीबडोगुमान॥१॥ नंदबन

नकीसैलसदाअमतकोपाना।सुराअ
छराबासन्नाननहिंहैमेसमाना।बिधरा
नीसागरसुताश्रीगिरराजाकुमार।सोहम
कोपावतनहीअोरकौनकहनारि।२
देषिकृष्णकौरूपजोतमनमेगरनानी।
वैतीनलोककेनाथबातबनसेनहिछा।
नीरूपहमारोदेषिकैडनछायोबडोगुमा।
नप्राणपियारीसंगलेषजनहोगगे

नदूदीसुततांहीकक्षसकलमनतदव
राईपंयपंथकैमाहिंचहुदिसिदृष्टिचल
ईकहोरिसखीकैसैकैरैफेटिापोआका
सगादादबानीहोगाईसबलेतसासपर
सास४लीनौसंथनिहारसखीपेकदीवी
ताहीसोराकैसंगिआगिलगीजिनहिव
डमाही [illegible] गोपीधूमतसीसकूं
नपो[illegible]कलचितआहाथेछूटियर

णीगिरीजिनपडोरोग्गामैनाा ५ रही
नरजन्मायचितमैनगिरहीफिरणी
डतहासिगारहृष्ठसीदीक्ततरणीबैठ
डकपोलधरितेनरहेजलपूरियरत
चरत्तपावस्जिनगयोबदनकौ ६ ह
बैनसबलालनीरजिनधमतानि ७
जलनूरबिगारनासिकामुखछाहू बो
तकछूश्रावतना ८ हबकतहूमन्नै च

रेती जू धीर जन नही करत परत पुछार
प अरि कहा सपना के माहि कछु नैरास
रच्यो प्रभु दो दो रूप दिषि प आप पुलोम
न नु रुक्यो तन मन नपीत त्लाप के छा
डाये बन आप इस तमै बिस आ डारो
सषि कौ न जनम कौ पाप ८ नाहें ना
तै देव कियो जदिपो सुष पायो पो आप
लो आनंद दियो ता तांहि सुहायो दोदो

रूपनिहारकरकरीकृष्णसूंमौजसोचखि
यौआवतनहीकितकरचलावोषोज
ण।लियोषोज।बिसवासकृष्णडूढणको
चाली।लियाहाथमैगातसुरतलेगोबन
माली।कृष्णरूपमनमैबणोकांकुंजडका
णवै।कोजरोतेआगियाताणोजिनपडत
नसाजूपावै।१०।वैआनंदकेपावघूमतेइ
तनतचालै।देषिदेषिपदचिन्हसकलहि

बडामेसाहै।वामतवारीरूपकी।तीपाकु
लकोमोहिजाद्करत्रपणकियोसरू
तनाहीकोहिरे।सकलसमीत्योदेषिद
गाबाजीसोकीनी।लियेकसमनरमापद
यात्रपणीनहिलीनी।त्रापजातिजानी
नहीहमसिरसीसबहोप।वोकामछोन
दकोलियोनावसुमोप१२ व्याकुलबद
नसरीरकसमुषमुषसूबोले।हमहछदे

पासकृष्णकूवूजतडोलैवटपीपल
सुनकदमतुमसुनोबीनती॥श्रीम २॥
वतगुलनूलैनहींकहहमैबतायनस्या
म॥१२॥ चलीरह्छसूयोनगोपिकानतरमा
न्यो बिनाकृष्णकैहेतब्रजतनकारिदु
जान्यो वृंदापैसबमिलगाईपूछीकृष्णव
ताय येम्हारानं॥कृष्णकौकैसोसोंफुसुहा
स॥१४॥ विचरतबिचरत जायमधूपुष्पनकी

डारी लेतबासगुंजारपुष्पकीन्यारीन्या
री करिकरतागोपीकहीजानिकृष्ण
कोराहेकलिपादुखपापखोडकरख
पडीकेसगार पात पातकेमाहिकृष्ण
कोटटतनारी टटतटटतजायपखेस
बैठेडारी खापेतदासीचरनकीप
डैतुमारेपाय गोपीमराईदागद्योपूक
होकृष्णसजाया छ्नातकृष्णकोबेमा

पिकाहछुहलावै।कहुलुषेछिपेवन
णामछूटनकरनीचैआवै।हेतरवरपे
षनचंद्रमाअरजकरैकरजोर।तुमछा
णीषरणीनहीकहुबताचितकोचोर
१४।चंदाकामीआपसमीतकुणनेवके
पडीजोतिमैस्यामदेषिप्याचोडैसूफै।गो
तमरिषकीअसतरीरूपदेषिललचाय
कपटीछलकरिकै।गयोआपोकलंक

लागयाग्मकहतसद्धीममफायरछ्व
रवैत्र्यपारीङ्गनसूछातीनाहिरहत
फाहृष्ममुरारीसवेकौसीततचंद्र
दे कृत्र्यानसमान कैचक्रदीकेनाम
नीज्याकापतिविनदुमीपिरानाव्यै
तसुवोयकडाररारादिकाहृष्णनचारे
जानीतोहिछिननापकोहीमरतीको
मारेजासूवायूकहीकियेजोतोहिदि

…आरहह॰ कहा होयसीमतेम
नसेगारवाय॥२०॥ सोजिननैननिसालम
गणीदेखी आती॥ इनदेखेघनस्यानदरस
करिहोरहीमाती॥ हेहिरणीअपारकारे
जावतज्ञानबचाय॥ मोप्यारीतनसाव
रोकहुदेखोहोतबताय॥२१॥ फाटग॥
असमानला॥ कहाकैसेवारी …पनजू
संसारनारिनाहैदभारी …

रिरोमुणो सखी सब कोय ॥ कोनारी सस
मे ॥ आलि प्रीतम दृष्ट नहीं होय ॥ २२ ॥ आ
तरूक्ष की पादि हिया मे ॥ चलत करा
सुणो हमारी पीर ॥ रज को है उपरागी ॥ अ
रि पर उपमारी को नहीं ॥ रज तो मके म
हि ॥ घायल ज्यूं तड फत फिरै कोई बूरे
ही ॥ २३ ॥ ज्यूं चंदे बिन राति ज्यूं प बिन रे
बिचारी ॥ ज्यूं पाणी बिन औसमपी व बिन अ

नारी॥दोकुललागौपतिबिनाबाणनालवे
चोट॥तनबस्तरश्रीङारसबबिनामजुरीपो
टा॥२४॥कैतसषीपूकोयदुषतुमहाष्षनपा
वो॥घरातुमारेकेथकोनहीनजनपेजावो
कष्मरूपसोमननलायोओरजायकोनकै
पास॥मीताजलसागर॥जसायणचात्रकमरै
पियास॥२५॥मुषधरबैनबजायहेमारोचि
तनडाई॥धामकामकुंलछाडिपासिहमतु

सहैरुयाई इसतमैंबिसर कीव विश्या पुकै
करप्रीत ध्यावतांमोरी करांवतकी नहि
दकुलरीत रहन्मावनतडफ तवनतेघ
ष्यत सहेतजणापोह ष्यकापनईतुमवे
तुमैंबिड दिष्यायो ससुराजव
नतीष्ठार कैदेनहि
मनहीप्र लोप
सीर नोपे

सुनकौ प्यारी॥ वै नारी की ज्ञाति आपके स
गपधारी॥ हमनै का चोरी करी उनकी न्हीक
हाटहला॥ हम छोडी बन तडफती उन लोपप
प्रारौला॥२८॥ येक सषी समझायन ई तुमकै
सै चोरी॥ करम करत है रंक करम सु राज क
रोरी॥ परवर आनंद देछि कै सषी क दे नहि
रोप सोना वै सो नीपजे कह्या गाहि का जोय २
ए दया नहीं तिर दई बिधाता ओ बनायो

जेकरपूरबणायत्रौरदूसनाहिंनुगापोई
नखूदावनबीचमैमिलैविधाताबारापक
डफैटमुकाजडैदेगुलचिनकीमार २०
णारीकथविजोगसमीकोईपूरबकीन्हो
करैविधातान्यायडुडुमूकोजूरीन्हो॥को
रविधाराडिकरिकूनटकतदुसपाय॥क
ह्यागयातोजाणदेसमीत्रापाकसवणाय
२१॥वणीपूतनापेकोवनगोकलमेकी

...पकृष्णकोरूपचूसिप्रानन्दको ८ ना
येकतृणाट्टतरूपधरीकियेजोतत्रप्रधका
रायेककृष्णकंतालतीमास्वोपटकपछा
र ३२ यकसकटासुरहोपरूपणाडाको
कीन्हा ६ येककृष्णकोरूपपावकीतोकर
दीन्हा येकबकासुररूपधरिचलीक्रन
कीलार येककृष्णकोरूपधरिचीतनीर्द
दोफार ३३ येक...

१पेकज्ञपामुरहोपपडिमारि ममुषफासो

दीफो येकज सोदाहोपकल्लको लेरा
दोरी त्याकपलकेबांधकेनेतीचीरव
नाय दोपछन्नकोर घरिपडीहोपत्र
रडाय ३४ येककल्लकोरूपघसी मुषमा
हीमासो जाजमुनाग्रेसनानकरिधारि
बस्तरजलतीर येककल्लकोरूपधरिचो
रलियेसबचीर छप वणीयेकगोपालगा
कलेबनमैधाई मावालालीयेबु

४ औरग्वाल्लनीहोय कृष्णकोनाचोबोलै

लायबैतिसबगोरसषाई॥ सखाबै
लायकैमुखधरबैनजाय॥ चरती
टैरसुनिदौडिगायजूस्नाय॥ रद्ध
कृष्णकोस्पदहीकूघरेघरडोलै
क्रमनाचतकृष्णजीग्वाल्लनपैद
न॥ कुसीहोतदधदेततजैसोघ
जि॥ ३१॥ येकृकृष्णद्र॥ रूपबैतिसा
कैमांही औरग्वालनीहोयदहीबेच

ताहीं । आमारि आइ पिरे दान देख
रजाय । कुंनदान लीयो फाड़ो कियो नि
विनिं गिपिड छुड़ाय । २८ । चौव्यासूपव
नायमधु परजीपरचाये । येक कन्ह
जी होय माणे वाल बिनाये । और चौ
बनिको सूप धारि लेर चली बन नाथ ।
रु चिहू चिपायो कन्हजी बुलाई लीयो
सब साथे । २९ । येक नाना को सूप होय फु

कारचलाई॥येकक्रस्नजीहोयनाथसिर
बैनजाई॥यकदावानलरूपधरिकीईश्री
गिनधानयेकक्रस्नकोरूपधरिकराई॥
सबकूपाना॥४०॥येकक्रस्नजीहोयपड्इको
जीपनेडाई॥येकड्इकोरूपधटालेबरस
णऋाई॥येकनपरणगोलकरनिधधासो
गिरराज॥यकइंद्रनरतनपरीप्रनुतुमको
मेरीलाज॥४१॥येकक्रस्नजीहोय

बैनबजाई॥ ग्रौररटेरसुनकाननूलसुध
तनकीग्राई॥ मंडलरासबनायकैबौल
तग्रानंदबैन॥ गंधगुणधरकहैगोपिकास
बकरतकलहजूचैन॥ ४२॥ इतिदूतीयपु
रसपूर्णं॥ देषप्यारीघनस्यामनिरषतेस्त
उतजाते॥ मित्रमंडलीजुडैदेषसुनगोर
बताते॥ घासबनितरबैठतेस्यारचतहैं
गाय॥ यासिलापरमित्रसबषोलिछाति

दधमाय॥१॥ चलेंग्रगारीफेरसैलग्माते
दसौंकरते॥ निरषनिरषवैनूमिघूमघुड
मुडपदधरते॥ तटजमुनाप्रतिछावरं॥नो
तमनोहरधांम॥ सुणिप्यारीमध्यांनमेंहम
करतग्वालविश्राम॥२॥ यकग्रायागिरि
स्ता फलफलतरावैंनलजाते॥ स्यांप्यारीह
मवैविसाफकोमिलनुलाते॥ इनतरवरके
पुश्यंफलसपासाथसववत्याते॥ यांकिमा

लेटोरै हरषनिरषमुसकायजक्तकेबद
लाजौरै बिधिज्ञानदत्रसनानकरिफे
रिज्ञासरवरतीर छाटिछाटिजलकेस
कापेरलीयेतनचीर ११ जैसाछासिएगा
रकमजैसाकरदीना मिलाहाथसहाथ
गवतसरवरसूकीना कहाछायाकहाव
दणीपत्नुकरिपारीसिल नसीनजुगमेका
मणीनसानजुगमैछैल १२ अथरमयुसु

सकायनाथ ग्रैसेफुरमाई तुमसुणोहमारी
बातयेकथामनमेंग्राई सुनथारीतोसेक
हतुमहैग्रबलाकीजाति कहतबेमसम
रमेजेपुवलेकेसबनराति १२ जानलईम
हा राजिग्रापफुरमाईसोई हैकोईससार
ग्रपरबलतुमसेकोई जोमरजीमहःराजे
कीलेमूह. गुणाय नहीलछी नहिसाथकी
गुथेकोफुरमाईः १४ मेध्यःरीतुमपासिकहा

सोअबहोजावै ॥ नांनारंगकेपुष्पमालजै
तसुहावै ॥ मैसिराप्रूआपकासुंदरकली
लगाय ॥ इसोबचननैसुनिनाथकोप्यारी
मनमुंसकाय ॥ ७० ॥ ऐसेकहतछबीलीआहली
री जोजावैताप ॥ सिरांप्रथनकैकाजपुष्प
लेणेकोआया ॥ कोतीजुगतबनायकैचा
लेआपमुरार ॥ बोमोकूंमोकूंचकहेफुलपु
कह्यावैदार ॥ ७१ ॥ धनधंन्यहोमनपैरजमे

आदेपाये निरंकारजोतेसरूपधरखेल
एआये प्रभुयोगध्यानआवोनहीबेद
पारनहीपात।धनसूघनसोहोस्यस।आ
वपडेजिसीपरहाथ।।५२।।तीनलोकवे
नाथपुरषकोऽतनुतडोलै।आपेहेतुम
पासिपुरषथोऐसैबोलै। जरदगुलाबीसो
सन्यास्यांमरंगआतलाल

।।५२ दोय

कियो नाणिको काम ॥ ७ ॥ सब अान्नू मण
आपहूसजी पुष्पन करलीनां कलकम
णिनकामकामसकल जैसा करिदी नामा
लाकें ठी पछमणपान्नु जबेमन तुरहार
पोचीगजरा मूंदड़ी सब पुष्पन सिणगारे ॥
८ सब पुष्पन सिणगार हक्क अपणा कर
लीनां गजरा लूमला आपछैलबैणियार
गजीनां प्यारी मन आनंद करन प्रभु स

ज्यौस्यामसमगात [illegible]
वैकत्वलापुस्य [illegible]
गोपालचलै [illegible]
रूपबधा [illegible]
सरूपश्च [illegible]
धस्त्रवन्नु [illegible]
रथं॥३॥ [illegible]
कौमन्यु [illegible]

मधुपातीकोंजानिमधूपातीचलिश्रावे
गजरानिरषतकेठकोलेकरस्पामस
रत॥ईचरजकोसुदरनपोडनलोमतो
हरहाय॥२॥चलतमदनमुषमोडिश्रा
परसेनचलातेहरषनिरषसिगारहि
येश्रानंदनहीमातो॥गलबाफुकरही
चरनपैनरतकरहेदोउनैन॥ सुंदरसुंदर ॥२
श्रापहेपूकहतपेमसुषवैनचपारी

रूपनिहारयन्यधन्यमानमौमांनी॥सवमा
रिनसोंजोंतहकमकीकि रपाउानी॥न
मातचालतहस्पसोकूछकूदतनरथा:
ताकदेकहमाातिन्नैकदेवे।वू:उारचा
लाइ॥मृगनेनकामानसोकोवि।न्नसोमा
बोनी॥सिंहमधकामाल्लजोतिकाचंदव
ग्रानी॥मुकताफललनथनासिका।अतरा
वेतुघपान॥जुगजननीनघरपूयं॥त्रिय

होतबषांन॥४॥करसैकरमसकापका
मकेतैनचलाये॥चतरपिपारींकंथब
दनलषिजूंमुसकाये॥काप्पारीतोसे
कहूमोसेकहीनजाय॥लषिलातुमरा
यान्हपैवैमोसनन्मातिहरपणाप्यायु॥५॥
यालैगाकीचोंतिकरिकारीगरसोईसि
रसालकीकोरईसीनादेषिकोईत्रो
याकाबेरननकरौसोहतरांत्रपार॥चं

त गछाकोईसीवणाजाइदद इ॥ हिकिरा
राद्द:पुष्यनवी।सिरमागआजितोनोत
मुहतो।व: रत्नपूलकं।धूमकनकमाळे
सोना:पातो॥ मधूपोतीज्यूपोरपै ग्रलवक
फूलकबलाभाया।प्यारीतुंमरास्पसोच
दचलोनहि जाय॥७॥ नहीडसीकोचाल
डसीनादेषीबाई चंदनि॥ रलगिजाय
चलोबिरहानर्व॥ छाईतो

हेतबषानाथ॥करसैकरमसकापका
मकैतैनचलापै॥चतरपिपारीकथब
दनलषिजूंमुसकायै॥कापारीतोसै
कहमोसैकहीनजाय॥लषिलछितुमरा
राकहूपेकोमोमनन्नातिहूरसायायायु॥८॥
यालैगाकीजोतिकरिकारीगारसोईसि
रसालकीकोरईसीनादेषिकोईन्त्रो
याकाबेरननकरौंसोहतरान्त्रपार॥व॥

[illegible]
राद्धः पुष्यनवी ।। सिरस्याग्न्या ।। डेतो
सुहातो ।। वः रनफूलवर्कः ।। धूमकनव
सोनापातो ।। मधूपोतीज्यूपो ।। पैग्यू
फूलवकबलनक्षया ।। प्यारी तुमरारू
दचल्योनहि जाय ।। ५ ।। नहीडसीको
डसीनादेषीबाई चंदनि ।। रत्नगि
चल्योबिरहलनवै ।। छाई येकयेक

गरी गोपी है रजमाही ॥ तुम सिर सी नादी ष
ती मो पती न लोक मैं नाहि ॥ ८ ॥ सिर केसरी
की घोर कहु का लागातण्यारी ॥ पगापापुल
फुण कार इसी नासुरपतनारी ॥ कोसाचा
का बीच मैं बिघटा त्यो तुम ज्ञा ॥ जनमज
नम हरि सै कहुं घो इतण्यारी कोसा ॥ ९ ॥ सु
पराज सुषज्ञान पाछिलापुनि सो पावै ॥ प
डै पुन्य मै पोटषोट जमै रे जावै ॥ दो लोचन

ऐसेचढेजूचढेयनसमैबाण॥ल्यागतबीछै
कालजोछैचतकपैपिरान॥१०॥गागतटसु
षदेवनृपकोकथासुणावै॥तहींनतेन
हिसानमूढकोइचरजल्यावै॥ग्रेलषव
ल्लनासानहैवैस्परसैगैजात॥नलमनोह
थकारनेकरकामीज्योनात॥११॥सुनिसि
पारसरूपतुरतमनप्रेगारत्नानू॥फूवसाच
कीबातरूपकीबारपिछानीकछुमुपजो
॥

तिघटाय कैं धस्यौ पाव पर हाथ ॥ वैमात्तिक
तिहुलोक म के प्रभु जाण लई मन बात ॥ २
बोलै आपन दासन ई तुम कै सैणारी ॥ चौ
लो सो होय जाय नहीं नूं मंडल सारी ॥ कहै
चरनन काटोल णोक है कामतें पाप ॥
कहै सुधा ण्यास जल नी कहूं कूं मुष कुम
लाय ॥ २४ ॥ नौतबार की फिरौं आप संग तुम
ना जान ॥ जैसा आप क गेर जसा ही जात पि

छानू।तुमबननबन्नटकतफिरोपडीआप
कीबानि।हमअबलाकोमलघनीमेकाच
लूजानि।२४।बोलेबदनमरोडिहारमोय
चढिगईन्यारी।पैडपैडदुखपायकहोघास
असवारी।इतनीकैकरिबैठगा।बोलेपूा
रबाय।मरजीहोतोम्हैचलोहुकमकरोघ
रजाय।२५।पडीचूकमोमाहिआपकूपाव
चलाये।देषतुम्हारोरूपनहीकुछमैंदी

आपे। अब पाचा लण हूं नाही रोस करो
मति आपयेक बार तो कर हत हैं न लचू
क की माफ ।१६। तुम प्राणन आप मार रु
तनमालोन सोई। प्यारी तुम उपरा तिलग
ति ना मुज कूं कोई । सब कूं छोडी बिलम
ती लीपे आप कूं लार । तरिचालो वै आव
सी तो पडे मोड मैं मार ।१७। तन मन हाज
रि पास दूर ना तुम सू प्यारी । तुम दासी सिर

दारा॥बचनपूकह्योमुरारी॥इतनेमनमैंको
सकेतुमहुकमीमोपजानि॥बैठोकाघेले
चलूफूवसाचनहीमांना॥१४॥ज्ञानकहस्रग्रा
धीनतुरन्नईगढीपारी॥दुपटाकमरिल
गायनकडूबैठिमुरारी॥सिरसालकूटक
सिगारबागुमोयोगाननगचरणचढेगो
लो प्रभुहोयगाथेश्रंतरषं
रणपरणावैह

योगुमायुगारवकीत्रैसीनीता श्रतिमनमे
स्वरज्ञत्तपोङ्तत ततैनचलाय तैम
फाडतबोटणीकितलुकेछिपेघरजाय
२० नहीमोजकितचालिनहीकितदेष
छाईहूपोश्नचंत्नोत्नोतकष्मकोमनकेम
हीफिरतोनैचैजाणिगयेकष्मछिटकाय
काचीकोमलकेलजूपडीमुरछामाय
२१ पटकतपांवपछारहाथकूजोरप्छ

॥फूलमाला॥सूमजारसूनपहछ॥ब
नाजेतमासौजेलबिनाज्यूबालूतड
मीन॥२२॥वसुंदरकरसंगमनघनसूम
सुदारी॥जिनकलईनकेमांहिंजक
लरहीनारी॥दूटताहणांपुष्पका॥
मुषफा॥॥कष्टकेटारीसूपकीजिनर
कालजैलागि॥२३॥भलकतलफमुष

यनहीकछूमगरहलावे मीलेनैनकेपा
टकर कावरेन्जावे पीपकजलमुष
सोपडेसोचावेमुषपान ॥ इतकातस्यौं
कृष्णजीतातैरसनिरूपना ॥२४॥ जोजन
नायचिडाप हियामैं गरबातुपायो वै
पाननआधारगारबजिननाहिसुहायो
कहारंककहारावकौगरबकियादुषहो
य कैवतहै सारमैंगारबकरोमतिको

करतांकरतारामसकलसोदीआये
रतनतचोघनिहारिकसकोहैनापाये
छमछमऐसैघहीफेरनईतनकासि
औरीसबंतसंकेसंमिटेइमततणीपिया
सारदआतिद्वेक्करतबिलापधीरह.रदै
नहीलगावै ढलकतकरसिगारजीवतन
नाहिसुहावै वृंदाबनकाहस्हमैउरकत
फाटतचीर ऊगतबैवतगितहैजूचलै

यनहीकछु संग हलावै॥ मीलेनैनकेपा
टकहैकावरेन्यूजावै॥ पीपकजलमुष
सोपडैसोचावेमुषपान॥ इतनोलक्षो
कृष्णजीतातैरसरितिमान॥२४॥ जोजन
नाथचिडायहियामैं॥ रखबातुपायोवै
प्राननआधारा॥ रसजिननाहिसुहायो
कहारंककहारावकौ॥ रखकियादुखहे
य कैवतहै ऐसा रखौ॥ रखकरोमतिकोय

करतांकरतारामसकलसोंदीआये
रतनतचोघनिहारिकम्मकोंवैनापाये
कम्मकम्मऐसेमहीफिरनईतनकासि
आरीसर्बतसंकैसमिटेहमततलीपिया
सारद्द्आतिदूर्भकरतबिलापधीरहरदे
नहीलावे ढलकतकरसिमारजीवतन
नाहिसुहावे बृंदाबनकादुखमैंतरफत
फाटतजीं ऊगतबैठतगितहैंजूचले

किसीकैपीरा॥२५॥सुरतनहीतनमांहि
दुष्यारीजटकतडोलै॥इतउतहमतुम
जायप्रसपरऐसेबोलै॥अरीहोवत
कात्रौसैविनपोनुनपातनकोय॥अप
होणीहैपीकरैजेदगाबाजदोहोय॥२६
परउपगारीकैतबिरछकोफूवसोईद
यानहीनिरदईइसानादेष्याकोईपरव
पगारिनरीतपापरदुषसुदुषपाय॥येअप

नूं दुष देष कै फूल फूल हरसाय ॥ २७॥
बिचरत बिरच ते फेर सकल सरवरपर आ
ई नीर तीर की ॥ ८ ॥ आय बास जल मै ॥ २८॥
ई अंतर चंद ॥ बास जूर ह्यो नीर ॥ २॥ य
फूं वन हीं सांची कहुं ह्यां प्यारी सीसन हुवाय
॥ ३० ॥ परन्तु पारी नीर बूंज ल्यो फूं वन बो
ले है दुष काट ॥ हार चोर कूं टूंटत डोले
दो चो जन का चोर है चित सात ॥ रा स्यां

ह्याप्यारीअसनानकरिप्यारोसीसन्हवा
योतेरेसुषकीकहतहैकितकूंगायेबताय
३पा॥उरीपोनसंलहरजुगलचरणनपै
ध्याईअरीईतकूंगायेबतायषरिलिपर
नाइफुकाई॥प्यारीमोहनषोजलपिक
छुधीरजमनश्राप॥तुमगुणवंतामा
होजलतनुनोतमराया॥२६॥षोजषो
जकाचिन्हनैनसूंपरषतजाईसिराय

...नछतीकरैआई। चोषेचोषेफू
लेतहांपडेघरनपरकोप। आरीआरीदेषि
ज्योबोलीवाहीहोय।२७। गावतबेदपुरान
षोजमुनीनापावै। सोहजबालगोपालवृद्ध
बनदुग्राचावै। [illegible]
[illegible] घरदै। बालको
कोलानगनसिराय।२८। [illegible]
[illegible] पुष्यनछमिनिहारदोरदोषोज

हाप्यारीअसनानकरिप्यारोसीसन्हवा
य॥तेरेसुषकीकहतहैकितकूगायेबताय
२५॥नदीपोनसूलहरजुगलचरणनपै
घाईअरीईतकूगायेबतायपषरिलिपर
नाईफुकाई॥प्यारीमोहनषोजलषिक
छुधीरजमनआय॥तुमगुणवंतासाच
होजतनहूंजोतमगाय॥२६॥षोजषो
जकाचिन्हतेनसूंपरषतजाई॥सिराय

।कीगोरनिषतीकरेआई। चोषेचो
लतहांपडेघरनपरकोप। आरीआं
ज्योबोलीगाढीहोय॥२७॥ गावतबेद
षोजमूनीनापावे। सोरजबालगोपा
बनदुह्याचावै। [illegible]
[illegible] ॥ घरहडबा
कोलागलागसिराय॥२८॥ [illegible]
[illegible] ॥ पुष्यनक्षत्रमिनिहारदोर

ह्यापारी॥अस्नानकरिप्यारोसीसन्हवा
यातेरेसुषकीकहतहैकितकूगायेबताय
उपा॥ठरीपोनसंलहरजुगलचरणनपे
ध्याई॥रीईतकूगायेबतायपधरिलिपर
नाइफुकाई॥गोरीमोहनषोजलापिक
छुधीरजमनआय॥तुमगुणवतामाच
हीजतलकूजीतमगाया॥२६॥षोजषो ॥क
जकाचिन्हतेनसूंपरषतजाईसिरायें

कागेरनिस्रतीकरेश्रार्ई चोथेचोथेफू
लतहांपडेघरनपरकोप श्रारीश्रारीदेपि
ज्योबोलीतादीहोय ३७ गवनबेदपुरान
सोजमूनीनापावै सोह जवालगोपालवृदा
बनदुद्याचावै [illegible]
समचरनलि [illegible]
कोलागनगसिराप, ३८ घरहड, बालको
रसपूराणापुष्यनर्म [illegible]

पिछानी॥ सिरापथनकी वातनारसुकैसे
छानी॥ वात्तैगाकी लेरत्नषिमनमैकियो
विचार॥ छीदा छीदापुष्पकाछीनारुछ
निहारा॥२॥ ताजाताजापुष्पसबीस्ताकाम
आये॥ णत्तैगाकीलहरछीचामेकास
आयो॥ इनछीदाइनसाकडाकोकरत
वरफूल॥ अककपडीकी छाहसूयाकोक
होमेपमूल॥३॥ सबकोकियोबिचारएक

यामनमैंप्यारी।मोमनन्नपोविचारसषीया
सुनोहमारी।वासरपैंग्रैसनांनकरिलांज
नाथ्योसीमि: इतनीलजानानईहवाज
हुआदीसारद।।वाजहैलाजसषीकुछ
सुफतनांहीं।तामेंकासीफेरकरीप्राण
होणीकांही वाप्यारीकारूपलपिहो।।
हैंग्राधीनातीजावनमैंकोनहीहकमकि
तोसोकीनांवः कोमझ्यप्रबलग्रेवग्रग

पिछानी॥ सिरापृथनकीवाततनारसुकैसे
छानी॥ वालैमाकोलेरलषिमनमेकियो
बिचार॥ छीरछीदापुष्पकाछीनांर६
निहारा॥ ताजाताजापुष्पसमीस्ताकाम
आये॥ पालैमाकीलहरछीचमेकाम
माथे॥ इनछीदाइनसाकडाकोकरत
वरफूल॥ अककपडीकीछाहसूयाकोक
होमेपमूल॥ ५ सबकोकियोबिचारएक

...यावेचारसषीया
सुनोहमारीवातसरपैत्रैसनांनकरिसांव
नाथोसीस॥इतनीलजानानईकवाज
हुआदीसा॥रदा॥बाजदेलाजसषीकुछ
सुफतनोंहीतामैंकामीफेरकरीग्राण
होलीकेहीवापारीकोरूपलपिहोग
हैग्राधीनातीजावनमैंको...
पोसोदी...

जोबनकेमांहीमदवंताराजराजपीलकुंगि
णतानांही ॥ येकजअंथाराजकाद्रकअथा
धनवंता ॥ अथनअंधामूरिखासोनजैनही
नावंता ५॥ येकअचंभैनौतसबीमोम
नकैमाही ॥ अणहोणीहोजायसुणपोका
रणकाई ॥ जसमतनोरेनंदजीजानतछा
नीनांहि ॥ कहैबुगालाकेसैनपोहंसबंस
केमांहि ६॥ जैसाजैसाजानितातसुतअ

तेरनाही पैकाजीमिलजायगाटरहेकैसे
माही।वातरुणीवैतरुणहैफिररजनीन
ध्यान।व्याकुलसेनाकामकीकीन्हानाधु
छापान।सुसुंदररितुपतिसेनरूमतनकी
रकहावे गजचावतगजचालचोरकेतू
परोवे। मनराजानूपरघुनीनमैकहावत
बान। हावनावतीमरचलैया।रितुपतिसे
ताजानि ४ ॰ इतेवतहै।केशवसखीकन

योतुगायबडिप्रभुतापाई। ईनबातनको
देषिसकलजलमाहिंनवाई। इंद्रसेचर
ननपडै। सबप्रजाप्रतिपाल। नारीसाब
नबनफिरै। तुमकरीनवोतवुषबाल।२२
चलोआगारी। उगिबगिकहाबातबनावै
हलोहोहोगेबारनहीतोदूराजोवै। उतिआ
गोवहासोचली। करिसापतिपररीस दईक
रतोरजी नो। उनपुसपनकसीस।२४

ग्रौरनहिकछुचाहिननसरूपनिहारै दे
दरसणछिपजायनहिंगमैंनेगडार क
हतोहमकोदरसद्यौकहछाडोनेनमोहे
॥४॥ इकतरवरकैबीचचीरकौफाईग्राई
ईकसखीसबटेरदोडिफाहीपैधाई ग्रापा
रीकोदेषिकै मडीसकलबतलाय ग्रौपणं
मतलबजाणियो ग्रबजाकोम

यापाकोफलपाय॥रोमतोतुममतिल्यावे
पाबनमाहीकोनइसीकोचेतकरवो॥ओ
गुणनुपरिगुणकरैमाहापुरुसकीरीत॥
फतरमाफलदेतहै॥तुमसुनिडीठनकी
प्रीत॥१६॥कोईहैलादेतहातसुचरणहल
है॥श्रेगालीहाथमरोडिबालमैहाथचल
वै॥उनकोकछुसोधीनहीं॥दिनहाथे
करात॥कानुजडकामावहै॥कुदेहीदुम

पात॥४७॥ येकसषीनुनमांहिनागकोमंत्र
चलावै॥ इसोगारडुहोयचोरकोपासिबु
लावै॥ सुगरांकोहोतोमंत्रसु करेजीवपार
मेरै॥ आया॥ बिनमिटतानहीं॥ योहैनुगरा
कोजहर॥४८॥ लोटलपलोटदोहोईसषी
जीनकैपरकीना॥ बातीचीरबनाया॥ नासि
काकरसुदीना॥ दोकांननपरमुषधस्यों॥
लीनीअकलिनुपाया॥ ऋक्षकस्तत्रायेत्र

री नही चेतकरो फीरि जाप॥ १०॥ पडतको
नत्न एकारतुरतही ऋषीयाबोली सोव
तलेत जाप्यमासकानीझ घोली॥ ऐकस
षीसीरहाथदे बैठे कसोनुगाप॥ ऐकज
दोरीनीरकोलाई मुषपुपलाप॥ २०॥ बो
लीमुषधुपलाई सुणोराबातहमारी॥ गो
हथरछोटकापदपानहीलीबीथारीहम
जाणतोलेगापो॥ छाडिप्पोवनमोहि॥

पटिकाशोनीरदई वोकुणकोसा
२१ नागवानतु जोहोतकछसेकर
। ज्योजिनकुसुमआय। जिनुकोदुख
आसीदुखसुखछायावछकी। रहतन
कसार। असुरनमैबासोबस्यो। बारा
कुमारि २२ तीनदीसालछिनांन
नमाहीहोती पूरनचंदप्रकासनह
हीसोती। ज्यो ज्योंहू रिछीपतादेवे अं

रीनहीचेतकरोफीरिजाप॥१७॥पडतको
नत्रणेकारतुरतहीऋषीयाषोलीसोव
तलेतजाणयमासकानीझाघोली॥ऐकस
षीसीरहाथदेबैठेकसोनुगाप॥ऐकज
दोरीनीरकोलाईमुषधुपलाय॥२०॥बो
लीमुषधुपंलाईसुणेराबातहमारीगाऐ
हथरछोटकायदपानहीलीनीथारीहम
जाणतोलेगायो॥छाडिगयोवनमोहि॥

कपटिकाश्रोतीरदई।वोकुणकोसगीहो
ई।२१।नागावानतुजोहोतकष्टसेकरीमृत
सी।जोजिनकुसुमआया।जिनुकोदुमबी
आसीदुमसुमछाया।वक्षकीरहतनही
ईकसा।२।असुरनमैवासोबसो।वाराजाज
नककुमारि।२२।तीनदीसालछिजानऐक
दीनमाहीहोती।पूरनचंदप्रकासाहतोत
नाहीसोती।जोजोंहरिबीपतादेवे।जोजो

मतपीरकु।बाल कजूबलाय।वपी
तामरमुकटवह।वमोहनवजाय।२५॥
मुमकेकेशसवारि।मागकीरफफडक
वे।गीवीमोतीबोलिस बीच्यसैसमभावे
तुतोबहुरीबावरी॥वेबुदिसोदुषपात।
दगाबाजकीप्रीतरी।दहवतहैदिनराति
२६॥षरिषीरजमनमाहिचितकोकाह
बिकलावै।जमोहनमिलजायमसाहीस

वमारिजाथे। तनमनमैंसोधीकरो।पडस
लोचालगागाधरस्वैरमोत्रामिलसीगोप
ला।ऽ [illegible] नन
दुसणकछुनांही·दोसहैत्रपणोमांही·क
कारीसोप्रीतवुधिकुछुसोधीनांही जजु
ऽटाकालालगेतोहोवतहैदुषदाय सका
नासुपीतकरि कहोकैसेसुषपाय १ कारी
प्रारीलेकसमी।मुषपरनांमोती जनोल

लगिजायजातमैहासीहोती।ईककाल
सैजीवआकोजावततनाकाल।घरमैका
लानीकसै।तोलेकरजाकेबाल।रकाल
ओगुणघालिकुणिसुपीतलगाई।नीस
कपटिज्योटेरासकरिसबछटिकाई।
नपरिसुंदरदीषता।माहिहेदुधार।जेम
मोहननिकस्या।जैपीमुषमलगयानाकर ॥८
राख।बोलीक्रम्मसुणपपासहेदुरानाहीं

सबकुदीछीटकाय॥ आपकामनकमाही
करताकरतारासमैआयोतुमबैराग ५
रनारीकुंजानिकैजासुंकरायेत्याग ४
हमछोडआबरागकछतुमनाहिआवै
बै रागिनकीरितजानतसोदुरकेहावै
चटिकमिटकसबछाडिद्यो करिबैरागि
जैस मोतिमुकटनुतारिकै तुमभुकटब
णावोभेस ए अंतरचंनणयोयाततयरि

नसमरमावो बसीमोहीरकायहायले
नादबजावो बाघरधारणकरो छाडोस
लदुसाल वनमालात्यागनकरो तुमप
हरिकाठकीमाल ६ जतुमकरौविचार
ोकयाबातबीचारो करिकरिनाकरीपी
तनासोचहमारो जसमतबूदेनदजी
नयेननोसुकला जतुमश्रवनेराग्यो
तोकुणकरसीवुणठहत्ता ७ दयावान

नीरदईसषीकहाकसैहो॥ अकनार
साओरजिणेकासुणियापो॥ अरीप्र
नांजनननावे है गईरास गरनाए
जासोहरिछीटकाणाये योजासुदुषपाय ८
कोनपुन्यकेजोरकृष्णनरासरचायो बु
नादीकसुखनाहिजसोसुषआपदीपायो
रेमआकटलतानहीफटचलिआयो॥
मान कोणजन्मकोबरिहोसोआकरि

नममरमावों। बसीमोछीरवरायहापछे
नादबजावो। बाघरधारणकरो। छाडोसा
लदुसाल। बनमालात्यागनकरो। तुमप
हरिकाठकीमाल। ६। जतुमकरौविचार
होकयाबातबीचारो। करिकरिनाकरीपी
तनासोचहमारो। जसमतबूदेनदजी॥
नयोनननासुछला। जतुमश्रवधैरागल्यो॥
तोकुणकरसीबुणठहत्ता। ७। दयावान

सोग्रजनवाय ११ ॥ केदेसमुलतांनतांह
हीरणाकुराजा ॥ ताकेसुतप्रह्लादजपोज
त्कनासिरताजा ॥ जनकष्टदीयोप्रह्लादकु
जानिश्रासरपद श्रादीयानीकसेनइवो
डारयोप्रभुप्रह्लोद पनिरसह ॥ १२ ॥ ग्रनक
योबलिनूप ॥ तोतदेवनदुष्टदीना ॥ नक
सुधारणाकाजप्रपवावन
नश्रागुना

तपैंडमैनापियोताकोमस्यौग्रन्तगुमान॥
१३ ग्रन्तकीयोलंकेशलंकसोनाकीपाई॥
कुंनकरणमेघनंध्रोरसमदरसीभाई॥ व
नारीलेगयोरामकी॥ जिनछायोबडोगुमा
न॥ लेसन्यारघुपतिचडे॥ ताकेछिनमेंह
रेप्रान॥१४॥ ग्रन्तकीयोहणमांनहातदुनागि
रलायो॥ नरतहियामैबाणिमचिम्रतुवा
छचलायो॥ रांमरांमकहगिरपडग्रा॥ व्याकु

...पग्रान। बरबाणलेकाग्ये: ताकोग
स्यौगर्व्वगुमान।२५।कालिंदेहमेनागाबस
मनमैंगर्व्वकियो। ताहांपोहच्योकृष्णमुरारि
दोडकैसैनमुषश्रापो: मुंखसुकाडि: कृष्ण
पैजुवाला: आगनिसमान: नाथ्यघालिशिर
परिचढैंताकोगस्योगर्व्वगुमान १६ गरब्ब
कीयोदेवेसकृष्णनैजिमनुडापो: जानिक
नकोगुवालघटालेबरसनलागे: ...

काघनजोरिकैछापोरह्यौत्र्प्रममांनानंष
परगिरवरधारियो।ताकोगाहोगारसतुमा
न॥१७॥अस्रेअसेबलीगारसजिनकोनही
चाल्योतानेकीयोगुमांनग्रन्तताकोदीन
घाल्यो॥जसुमचाहोजीवकोतजोगारसको
साथ॥ कोनसुनीनामानहोपात्र्प्रापष्यारदेषी
बात॥१८॥अपसोदुष्मलीषांनिमषीत्र्प्रापन
मैंत्र्प्रायो॥दीनांकह्युमायमुणोजासुदुष

पायोसोकरियासोनोतिया।दूजारकीसी
कूंदोस।बोल्याबातबारौफिरकोक
रिकाटनरोस।१५।होणीहोसोहुईसुण
अबकरणाकाई।नरमतनरमतफिरा
कृष्णजीमिलियानांही।मनमांहीधीरज
धरोकहुबाति करोबिसरांम।सोचरोस
सोमिटतनांही।सोकुछलीषीकलाम।२०।
मोड्रागपबजायकष्टकुंनचनचावे।ज

मोहनमिलजायसुणरीआपाणवों।तरव
रषेरादेषिकेसबनुविबैठीजाय।कृष्णच
रणकोध्यानधरि।सबारत्नगुमानगुमा
य॥२१॥श्रीव्रजराजगुपालगोप्यकानाथक
हावै।दासीसबदुषपायकीपोसोअबतो
आवो।मोरमुकटमुषबासरी।ईसोनदुजो
रूप।आदरसणाहमदीजीपे।प्रभुतीनलो
ककैनूप॥२२॥दीनानाथदयालदयाकेस

दखसाय बांहितुममोरिहमारी ॥ अनाघात
पतन्नैनसासहैमदेतीमारी ॥ केतेउदयमग्र
पकैहसनैसहेअकांनि ॥ ऐकबारतमनास
हो ॥ हमरोनांथगुमान ॥ २५ ॥ सातच्यारनोंती
न ॥ चतुरदसनाथकहावो ॥ त्रिपाकुंतरस
यवोछपएाकहादीपावो ॥ हमकछुचोरी
नांकरितासोदुखदीमलाय ॥ बीडदरेहमो
अबआमिलो ॥ दीनुगान्त्रनवाय ॥ २६ ॥ सुणि

बडाईलहोतआपकीजुगकेमाही।ओगु
णहमरेनाथचितारोतुममतिनाही।अव
तोआवोदरसद्यो छाडोहमरोदोस।गज
कोतोनाचाहिजेप्रनुकवलकलीपरोसो
स।२५। तुमतुमबीडदसमालिअवमतिदे
खिहमारी। हममुतिहीनीनारिमाफकरि
ओगणसारी।व्रजपतिईसुरआपहोसर
णातहमदीनाईनकामदेवकेघेरेमे।प्रनु

पलपलतनकोछीन २५ सोसोसरए
आयुजिनकोकरतिवारसो तुम बिना
थ अनाथकाजनो हमरो सारो गोपीना
थ कहा तहे नाव बीड दतो राषि आेाए
लषि आवो नही तो जात आपको सोवि
२ए स्याम रंगा गुण मानि स्याम सो सबसुषपा
वे कोउ कहतिवारि फूठनसांच बतावे
कोउ छांटानेक सो होत नेनमेंनो हिरूप

[illegible]

गदेसोबणी॥फतरज्योजुगमांहि॥२०॥कारा
जरहोयनेनकोरूपसुधारे॥कारासि
परिकेसहो॥वसबकेमनभाय॥कारीबा
कोयलीबोलीतमंनहरखाय॥२१॥कारि
तनरेषरूपगुणदोपदीपावे॥एककारारे
गहोईरोवतीबालहसावे॥तुछकालमे
णघणकोलागकरेसराय॥सबकारेतुमक
जीहमकोकरदुषपाय॥२२॥नईनचर

१ जबछीमामेमरजावती

श्राय जबतडिफतडीफजीकजाय॥२६॥क
रीसौतबरसायनाथतुमश्राणिहमारीहा
थालीयोनुपायबडोदुषश्रबकेनारी॥वह
वीथाद्वरीयावके॥नहापालिनहीपाऊ॥दु
बतहेतुमराषीयो॥प्रभुश्पोराष्योगजराज
॥२७॥कामबडाबलवानसदासिवन्याकु
लकीदेषिमोहनीरूपलाजसबकीतजिदी
नी॥ब्रह्माकीमनसाडीगी॥ चलिकन्या

कीलारर्जुनकोडारयोनाडरयोहमतोहे
श्रतिनारारश्वतुमबिननाथदयालश्रो
रनासुकृतकोईपडीचूककरिमाफना
थश्रबहममेमोईमारोताडोमरनेहेसुक
तनाहीश्रोरफाकिसमदकीसवरयाप्रनु
जायकोनसीमेरारणवहिश्रानिमाह
याजिश्रपरबलदेकुजारातुमबीनश्रीम्हा
राजिश्रानिदुसकोननीवारेतुमराजन

मनसुसुषश्रायेपङ्योजमर्ईनकुपावे॥ह
रि हरिन्याकरिबिषचंद्रमांकरतकछ
कीचाये॥वीपतिपङ्यासंगीनही॥देतहेम
छिटकाय॥४४॥हीमूषिरनहीमासहाड
जीनरह्यायेकोरा॥रह्योनेनश्राजीवन
नहीबोलनकोजोरा॥मरबोधास्योगोपि
कानहीमीलनकीआस॥कदमलताकुची॥५
रकेपतुश्रायकीयोपरकास॥४५॥मगपत

नीपतजायजुथकाजूचलीश्रावे।।करक
रनचाकांनतुरतगडीहोजावे।जुमोहन
कुदेषिकेपडीनइसबनारिननकोदुष
जैसेगयोजुरबीनगण।अधिकारा॥५६॥रबी
नगणसोकंवलषीलेज्योपिलसबश्रंग॥जो
रजुरतिज्योश्रापज्योतीजुचीकटसं॥
श्रतणासासरवरमीलेंबाधीरजज्योश्रा
पमुजीकीपुजीगेपा।मील्याजीसोसुषपाय।

तिकेआगेआजडोपुष्पमेवबरसाय॥३॥नी
लमणिनकेसुनक नकजालतेज्योहीरा
मुक्ताफलज्योसांमसीसपरचंदनफीरा
बीचमेबढेकलसजीलीपागोपिकाघेरग्र
बडीलालमतिदीज्ययोनहीजाणजायपापेके
शि॥४॥ वुकतहेमहाराजिजीसीकोनतरचा
वे नजनजनाजजीसाजनकेनकह ॥५
वे कतघनीवहोतहेचावतकोनाचापव

तामांहनश्रापहोइजाकोनवताय ए।म
तोश्रसोनांहिजेलाईतुमकहोप्यारी।तुम
बीछ्य्रोमतिजांनिलरडोलतहोथारी
देषतहोतुमप्रीतकोकसीहैमोमाहि।जोगा
ईसनमुषवतिक्षमसोननमीलावै।६।को
हतमी रूपविहारहातछिपावै नाथनाथश्रवज
लतहै।करोहमारीसाय नाथपयोधरप

दरोजुबीरश्रगनिबुझाय॥३॥तुमराही॥
कठोरपावतोकोमलमेराजचरनना
डिजायकहोकाहाबीगरततेरा॥हमका
रौनकोमलजाये॥गजककाजकठोर श्र
सीतोनाचाहीजे॥प्रनुश्ररजकरांकरजो
र॥८॥तुमदासीदुषपायेबीडदतोपोनाथ
को॥ फुकोश्रगसबजातमहरकीनीजस्या
ऊंको॥ श्रोगुणहमरेबीसरोहमचरणन

कीरास खनबीनकोनहुमेटहे चात्रगतण
पीयास ९ ज्ञानिकष्टब्रेजेबालदयाहरिभ
नमेधारी नीकस्योसकलगुमानकष्टसबण
वतधारी परमज्ञक्तिलषदीनता सबधारी
मनन्नाय रीत्यतिकाप्रभुघेरसे गोपीलईब
चाय १० महष्नगजबलवानश्रानगनंजी
त्योजावे लषचोरासीजुणिसकलकोनाचन
दे सोजीत्योप्रभुमदनकोपड्योपाव

तापं गोपीमोहनप्रीतकोनही ओडनदीष्या
ये ११ नईमगानमनमांहि जोरिकरिश्रजे
लावे प्रथमरासआनंदजीसोन्नीओसचा
वे करणानिधिकरणाकरीमुषघरबन
बजाई जसोप्रथमरासहोजसोलीयोवना
य १२ प्यारीस्यामनिहारिस्यामकोनिरषत
प्यारी लटकमुकटमनमोहि मननयन
लकारी वापुलबडि आनंदकोकरसकेन

...पकोआनदनयोपेकआ
यानहीगुमाना।१३ पूरबदीसानिहारकव
नयोकह्योमुरारी। दिनकोहोतउगानधा
तुमजावोप्यारी। ब्रह्माकीरजनीनईछी
मातरज्योंजानितुमहमरकहाबरहोसो
नदीगोनाना।१४ इनचरननकोसमान
नीतछेडाचावे जानतहैमहाराजिय
षफेरनपावे सदासरबदासमान

ममनोहरजोस॥तुमबीनमुनोसाबरेहम
नाबेब्रजदेस॥२५॥अरजकरिकरिजोरि
सदामेरणियाथ्याहरो॥माफकरोदुषण
यापोआबैरीम्हारो॥प्यारीतुमसेदूरिना
जबदेषोजबपास॥तुमसेतीब्रजमेबसु
तोलालघरैनआकास॥२६॥बडेबडेमुनि
राजआपनोंजनचितमांहीप्रेमनकि
मेवाचिनचायोकपिकीनांहीपीछैमेरे

...गुणमीश बिन सुवाद ...आद तुम बिन मोरना
बचन परनाम सकल मोहै न सेकी ना ॥२७॥ कोल
कीम रजी देषि धाम कारस ताली ना हरि
मुडि निरषत कम कुपद पद मोम चलात
मत ई छ्या पूरण जई बसी धाम जुगलात
॥२८॥ लीला रास अपार नहीं कछु बरनी जावै
आल बुधि आपान मुड सो था ... बन...

अतनागुननकोकोकरसकैबषान।सेसस
सदोतीसरेहोवतनापरवान।१९। दीषत
दुरीबातनाहिगोपिकाहरिकेमाही।जसेतर
वरमाहिदीषतीदुरीछांही। कह्यगोपिका
एकहेदीषतहेदोपआ। आप्पानीकुदीषि
जोजलसुजुदीतरंग।।२०। बिश्वमूलआधा
रकह्यब्रजराजकहावेगीताबेदपुराननमहं ।।१
नजनसकलबतावे।सातदीपनोषडमेजेन

बाहरिकोनाहि तीनलोकवोराम्नवनबी
राटरूपकमाहिं २१ येकचदयेकम्नानदीय
ताहाकाहाही फूलपानफलरागडारमेदी
षतनाही मुषश्राणेनाटिकव रैहोवतानाप
रमानानटानतिकुजानेनहीतोहरिगतिनीक
सैजानि २२ हरिमायाबलवानजातनाकोमु
जानी प्रेमभक्तमेरहतरहतनावामुखानी
कहरुकाकंचनकरैकरचामको

वस्त्रसुरका|कोचाहतश्रोता२|सबस्त्रीगु
पूरणकरी|प्रभुव्रजमंडलदेखारि|२|प्रथ
जसमतिधनिनंदा|कृस्नजीनाोदषि
ये|धनिवछा|धनिगाय|कृस्नजिनघासच
रुये|धनिधनिसबव्रजी देसको|धननाा
धनगुवाल|धनिदरवनधाम|ना|ताह
लाकरीगोपाला|२८|वृंदावनरजनू
तप्रपानकाहानहमाबे|सुरतरलवनत

धन्यजोवहादेपावे।जपतपत्तबरादान
दावंनदेपाय।पापीक्रूरमिनातिमी
लो।जजनममरणहोजाय।२५।नृपतसु
तिदान।करैकंचनगजराजा।व्रतकर
जिणकरैकनौसुमरथकाजा।गावदान
नृदानकरि।करतमासग्रसनांन।ई
लवेनालगो।वृंदावनकेस्नांन।२६।कृष्ण
वकोध्यायगोपिकाजकोध्यावे।ह

अथरैसेदकोरासालेषते॥रेसदकीपुन्यो
षदाईरासकीमोहनमनआई॥वजाईवंसी
दसालालतुलावन॥सबव्रजकीबाला॥वनमुन
आईतनकोलातोइक्षधंधनकीहाला:
कोईअंजनसुंदरीसाठौयेकहीननकीसकै
हाथवीरजतघरपणहूलाम्हलीयारनला
जसबकूलकीलाटकाई॥१॥नीहारीमोहन
आतीप्रेमसंगहोरासबसानी॥तुरतनाकमी

तनवाती॥ह्रतकुंदरसनकुचाती॥आनति
लेजवसाव सेवो लेमनमुसकानारी॥मक्रि
थकीसिवा॥वतमेतपुरान रनवनकसु
मआई॥२॥सकलसुनसोचकहोमनमे
छाडघरआईगईवनमेंहसतुमआइक
हामनमैंछुडायेघरकेयारुवनमेंपानपांनस
वमीसरीवोसरीकुलकीलाजकामकाजसव
घरकोवीसरीसुनतावनआवाजआपयी
कहसीचीतधारी॥३॥आपुनवोलेअव

६३

नासाधीयाश्रीमती [illegible] रसीसखेकाहनसरेमन
व्यासीज्माने काहै [illegible] वासीकोलकीयेछो
यादीनोंमें [illegible] आय तुमनावोलेना
हीमतो [illegible] तनहीहुलायक
रोतुम [illegible] कनगोपीसीनगा
रीत्रभ्रिकवननाम [illegible] नीरतकरमोहन
संगप्या [illegible] स्वन्नारीमानवान
सवगोपी [illegible] रूपवकुं गइहई

वानवनमैलईग्वापसंगवीथावासवक
तनछाई॥५॥गारजकरवाकुनीत्यागीपी
छलीचरणसंगलागी॥ढुडतीप्यारीपग
ईसुनावसुतमोहनकोजातीरंछमकुपूछ
तफेरकहुदेखेनंदलाल॥मोतीलामह
राजहसनकीसोकीनीवुजबालनीरते
नतजउल्याई॥रसदीपुन्योसुभवारी॥रा ॥ह
समोहनमनल्याई॥कारपाकरजाकीत्रा

दीनावीआहरगोपीनलीनी॥ वीआस
डीकुदीनीआरतीसवमीलकीनी॥न
सोगोमंदयेकडीगहेय॥सुरपतीबु
मोहेगयेमदासोवसोय:जनकमुरली
नपाई॥ ७॥मनोरथपूर्णकरदीयोमास
दयामदीयो॥गोपीकाकहासुरतकीय
नहकमीकरदीयो॥वोरजईजवगोप
गरेआपकधाम॥ ॥ ४रसवमं॥लद

फोपीकानावस्त्रंगालकोटीनमीटजाई
रसदकीपुन्योसुषदाई॥१सकीमोहनआरि
ग्रपरसदकोरासस्संपूर्णं॥श्री श्री
अथगीरजलीलालिख्यते॥कृसनहमस र
गातनेरीवाजआईडूनगोरी॥छडेदेषोव
वादलआवैधामनीषमकतवहल्यावै॥मेग
रलेमांवरसावै॥वाजआवकहोकीतआ
कहाजीआवकहसकरफडौईडुसुवेर

कोपेसवग्रीथीकोपालककीसवी
हराफतनकीजैनावेरी॥१॥हस्न:
तुमनहमसानीसेटगीरवरवोमन
इकीफुटीसवजानीलिमतम्रवनु
नीगोकलनराजानंदजूजीनकेक
वायमीछ्यावचनहोततुमरोता
तुपायंजुगतहमन्नोनराहेरी॥२
कहकांतुमरेगुणवारीपुतनावा

मारी॥दुटनी मायावीसतारीआइवनसु
रसीनारी॥वीप्रकेआचलआगलेदीये
आपमुखमाही॥येकमासकोतुपतीहारो
जीवतछोडीनाहीमारकमारगमैंगेरी॥
नीरमलजलजमनाकोकीयोप्रचकारदा
वलपीयोहरनबीजवासनकुंदायो॥प्र
दकहाबीजप्रमनलीयोवारजतीहार
नजाइंद्रकारपमाजन्मवसहुपकरोवी

जराजाकहुनासद्यागोपालजसतमवृजजा
नदेरी॥४॥आपसजजाथजमुरकायैवचन
योमुखफुरनाये॥
येसंगलेगी स्वरूप
धारीयोकीयो
प्रतुदीयेचक्रन
गेवतसीरूपचरा
॥लाानदमोक

मरपीराकोससातकावीचमैंगोवरखरव
तारवरससातकोरुपपक्षसोन्हीपुष्पजु
ऋसीसाव्रीजयुनीहूरी॥६॥व्रीजजीनक्ष
दमैहरसः इंद्रतोकोपकोपवरसन्हीज
रवरपरसवरसतवरसतहारीजगजा
जादासदोनुहाथमीलाकरइंद्रवसौ
रणमैंसीसवुधमहेरीमायानफेरी॥७॥
त्रंचतोयाकौकछु इंदुतोलाषकोटी

दोहो

ई॥विनावनजुगदु पुनमाही तस्मानतनेरक
छुनाही॥ग्यानपतलोसमास्की। रामरीमो
थांमाघर नीरमारवोवशवेकोनथीचारो
छदनावन नी मवेश॥कमनहिसनरामा
गततेरी। झाउन डडनगेरी॥ना श्री॥
अथवार मास्या गा वरमहलथा॥मास्योले
ष्यते॥दे श्या॥ बुजेत नमेरी श्रवनाजव
जानुतवे पोव जी: हरदावी ववसपे

नीसदीनटोटरमलकीरोधानी:वूलचूकमे
हरीमाफकरोकरपकडकीनीरवानी:कवर
लीलावरनीयेकहरफेमतीरमबानी:पूबू
येकहकीतअमारवीमूतकुवडाअचवा:मा
षनकेमीसघरघरफेरेता:लूटतनारगोकल
कीअसीगुजरमसतानी:षटीपुकारपोलमह
लपरदेदेतालीमसतानी:देमजसोअगया। ।
लकीकाहाकहुतोमुनीदरानी:कवरअस

कंवरकानकेकरमनीगोडेमुखपरह
चीकसानीटुकटुकमेरीआगयाक
चदछातीपरगुलचनमारी:नोदी
गलीहुदावनतोदीनुननहीमानी
नकाआटफजीतीनीकलजायगीज
नीजसुनपातीसासननदीयाजाकंव
रजवसीकाती।।मेराकंथावटाजीन
वलीडालेकरथुनीअसीकरता

॥मुनकरमातजसोभावोलीदेमुरीतै
याचोलीवावालकतुमरीजवानी॥म
ा चीकबमानी॥ॐमुमवोलीदेमजसोः
हुतोमुनीदरानीकस्त

रषडेनंदलीलामुरलीमोसिपीतामरकछटकी
तोटलईगलवममालामुषसुवोलीदेषजमोषा
काकहुतोसुनीदरानीवडेघरपलमलगाती
गयेघरकीमसतानी॥२॥चतमहीनागुलरंग
बीनाहीलमिलनीकसीब्रजनारीसीसफुल
मुषचंदवीराजतुलफोनागनवलषारानर
नीबरनीमीरगावरनीबत्जोबनमेनझमाती॥
उमगाजोवनउटतानाईविनामहावतकह

[illegible]ाकथा [illegible] यातकतीटोलबरदलामैना
खडीननाम रखानविरकापल[illegible]लतरवार
जडीमुखपुवीनीदेसजतोधाकाकहुतोसुने
दखनीद[illegible]ति नरकलनकुपलमलामातीनु
गुजरदा[illegible]नकृतानीमावसाथसाथकरी
पाकदीनीमातिकते नहाघरमे रायेनुदामा
खेडलवा रजे[illegible]नीतनुडकरतेघरफीरादे
मत्रकल कुजन वनमेमाघे रात्रसाडीट

मप्रानहीमान:हलधरसुधारसलीपामे
यलोतेतीलाजनम्रानीम्रातीजाती
देजालाजोदेमजोमेचावेकवछोडेतो
यनंदलालामुमसोवोलीदेमजसोधा
क्याकहुसोमुनीदराणीवडेघटुपलम
लगातीतापेघरुकीमसतानी॥४॥जे
ठनेटकुलकानतनेटकरसेजपरापा
म्रानमडी:तोरेवदनपरजरादरसन

ी॥का१८देवलीयापोजमडीफीरघुम
।धूकीमातीनैरीवेदनहाथनआती
ीसेवडावैदबुलातीसेसनागकीलर
डीरुपदेषनोनडवाजेकामीलडेवा
।मडीमुषसुन्नोलीदेषजसोधाव्याक
नेसुनीदरानीवडेघरुकुपलमला
ंलुगुजदारीमसतानी॥पा।सावनाट
।रमडगवाडलेलटनैकूगोरीआन

वाला दमजसोधाका कहुं ता सु नादरा नावट
घुकूं पलमल्लाती ादेघुकी रसताती
॥५॥ नर नादु जादु जुगजानीपीरतीकरी
करकैपीछुतानी: चंद्रबदनसीघरतरेखी
जनंदपरतरया जे रेसनमानी: घरकोछो
टीदाषचीतुजुगपेवाचतेगुडधानीदासी
कीतुमकरोभवासी: वीरजकेलोकरैतेरी
हासी॥ जादुकुलकेसवकोई॥ वेदरदीनी

नंदके तुमसी रसे ओरनाहा कोई॥ वाल
जोबनतुमेरा छुटादगादीयेपारे:॥रेजुवानी
चकस्त तनवटामानमारेजी॥मुखसुखे
लीदिषजसोधाक्याकहुतोसुनीदरानी॥वटे
धरुकुपलमलमाती-नुगुजरदारीमसतानी
॥८॥आसोजमोजरमरोजरोजनारम हुए
एकरतीवीजनारी॥करीसोलासी एणा
कामनीचलीनोतनेब्रह्मचारी:

तेचरणांमूतलीनु:केसरतीलकगुरनक
कीनात्रराजसुनोमेरीवासाव्रजनीघनी
जीमुषसुनहीवोलीद्विजसोधाम्पकहु
सुनीद्दानी:क्षवरकमकुपचाम्यातीं
गुजरदारीमसतानी॥एकातीपामम
वडातपनारी:तीरनीपरनीअघडक
वारी॥येकमहीनासकलपकीनाजो॥
जोसुषसारीकापाचदीनापक्ष्नीकन

केदीनपलानछीवनरीकादीपध्यान
गकुरकीसेवाःफीरपुजनीगणपतदे
वा॥हीरदवसोनीरंजनदेवाधरोध्या
नगीरनारीकाघरवगावीरजनीदजी
मिलातावचनफलवीरमचारीकामुष
वोलीदेछजसोधास्याकहुतोसुनीदरा
नीक्टेघरुकुपलमलागतीगयेघरुकी
मसतानी॥१७॥दसवामास लागमा॥

केचरांमृतलीनु:केसरतीलकागुरतक
कीनाऋरजसुनोमेरीवासाव्रजतीषनीष
जीमुषसुनहींवोलीदिष्ठजसोभाक्याकहुतो
सुनीदसानी:कवरकष्ठकुपवमस्यातो
गुजरदरीमसतानी॥६॥कातीमासम
वडतपनारी:तीरनीपरनीञ्चषडक
वारी॥येकमहीनासकलपकीनाजो॥
नोगासुषसारीकापाचदीनापक्नीक

केदीनपलानछीवनरीकादीपध्या
गकुरकीसेवाःफीरपुजतीप्राणप
वा॥हीरदवसोनीरंजनदेवाधरो
नगीरनारीकाघरवगावीरजनीदु
मिलातावचनफलवीरमचारीकामु
वोलीदेछजसोभास्याकहुतोसुनीद
नीकटेघरकुमलमनातीगयेघरु
मसतानी॥१७॥दसवामासलागेमा

सीरकासोचक्रीपावीरजनारीमडीउ
धोजीगो कलमन्त्राये॥जीनकेकाना
ननकपकडी:अपनेअपनेनीकसवा
रमुनरनरदोडीवीरजवाला:पूछतधेम
कुमलयतनेकीकबघरवै नंदलालापत
रीबोलङ्कसकीवाचीमानहुईजवआ
वलानाचीअवतोहमकुपादकरी:सा ॥३
तवूंदजवपडेघरनपरमुकीवाडीहे

यहरी।तधोजीनाः डीमोली॥दीयेहायसद
टाफोलीपहरकातकीगलसालाः सीगीसेली
कानमुस्पसीपरवोटोपीरगछाला:मु
सोवोली देव्रजसोधाक्याकहुतोसुनंदरानीक
वरुतकुपलसलातीतुगुजरदारीमसतानी
१९॥पोसरोसमनमोसधुवागनवजाकघरमा
हीःसुनीसेजासलावराव्रकीनकेघाला
मलवाई॥मीसीचरतीघरमेफीरतीःतन

जाईमेरवरसनकीतुमतोवनरयेफुल
कवलकेहमकलीयासुरदरसनकीराधा
रूतमीलेतुजवलकेकंचनमपुषराजदी
वीछडेमीतरमीलेआनकथनटोटरस
लआजीघडी:वारामासीवएरईकासी
राधोचरणकवलकीदासी:राधोतुमारी
घवासी:।नीतनवदरसनकुकनका १९८
नहीलधजानुचोरासीमात्राफुधसी

बोलीदेशजसोभाष्याकहुतोसुनीदानी
कवरहस्तकुपलमलगातीगायेघुरकीम
सतानीः॥इतिश्रीटोडरमलकोबारामा
स्योसंपूर्णं॥श्री श्री श्री
॥अथदानलीलालिख्यते॥दानकीलीला
कहुसारी:कीरपा॥कीसुलखारी:
गुवालनदधबेचनचालीकमघमहोर
मतवाली:मिलेदोकुमारवनमारीमोह

नीबंसीकीटाली: कस्नकहसुनगोपीका
दोहमारोदानमानकहा हटछाटरंगाली
आगौदुनहीजानकहतयोमुखसुगीरखा
रीदंनकीलीलाकहुसारीकीरपानुनकी
सुलापारी॥ १॥ जतपरजातन्हीं ताणु
कहयाकाहुकानहीमानुनंदघरकसोमस
तानुनुकौवसतीनाजानुमाररोकोकहु
नजीयेकहाकीजनुरीतनोलयछनन्द

घरदुजकहसीरखोनीतचलतनलातिश्रा
गडुजनारीदावच: लीलाकहुसारीकीर
पागुसकेसुलागपारी॥२॥ कमटकीलुटव।
छीनलीनीदायाकछुमनमेनाकानी: छरे
कीमुरतरंगलीनि: अधडीजाननहीद।
नी: वृजचोरसीकोसमलागा॥ हमरोदेना।
॥७॥ तुगुअरक्षकीनतवारीकहस्रहसा॥ग॥
॥आनंद॥८४॥ श्री तुमएवारी॥ दान कानी

नाजमेरीसारीफ़ोडारी॥दानकीलीलाकहु
सारी॥कीरपागुरुकीसुलगप्पारी॥वनसुन
वोलीतनंदराणीसकीतुमरवतनाछानी॥ला
मर्मईयेकनहीमानी॥कुसनमेएवालकतुम
जुवानी॥घरछांनेघुमतिफीरोतुमहोसववी
रजकीनारी॥गुलचादेदेकसनसमावतह
मसुकरतपुकार॥सकीनमुएहोगईलाचा॥८
री॥दानकीव्लीलाकहुसारी कीरपागुरुकी

रूपगुरुकीसरनगाय॥री॥५॥सा॥जागो॥र
तेगीरनारी॥वेदगुनगाततनीरतारी॥ज॥
थीवीरजकीनारी॥॥गायायधायोगीरधारी
मामनमोहनलीलारसानकीनरमूनीत
याटोरसनजागप्रनहीजानताननन
फलपाय॥६॥सतनचरणनकीननधारी॥
दानकीलीलाकहूमारी॥कीरपाप्रभुकीगु
नगारी॥१०॥इति श्रीदानलीला संपूर्ण॥श्री

लाजमेरीसारीछोडारी॥दानकीलीलाकहु
सारी॥कीरपागुरुकीसुलगणारी॥वनसुन
वोलीतनंदराणीसकीतुमरवतनाछानी॥ला
मम्हईपेकनहीमानी॥कुसनमेएवालकतुम
जुवानी॥घरछाडेघुमतिफीरोतुमहोसववी
रजकीनारी॥गुलचादेदेकुसनलफावतह
मसुकरतपुकार॥सकीनसुणहोगईलाचा॥८
री॥दानकीद्वीलाकहुसारी कीरपागुरुकी

रणगुरुकीसुखगाइ।री॥ए॥ध्यानजापोथर
तेगीरिनारी॥वेदगुनगावतवीसतारी:ध्रनजो
थीवीरजकीनारी॥मा॥ध्रध्रायोगीरधारी
माधनमोहनलीलारूसनाकीपटसुनचीतला
य॥टोडरमलजमपुरनहीजावतमनवंछत
फलपाय॥रूसनचरणनकीवलयारी॥कीर
दानकीलीलाकहुसारी॥कीरणागुरुकीसुख
गप्यारी॥१०॥इ।ते श्रीदानलीलसंपूर्ण॥श्री॥

अथनागलीलालिष्यंते॥वसतहोजमनामैंका
लीनाथकरत्यायेबनमाली॥चरावनानुन
कुध्यायेचलतहीकालीघहआये॥गोपीजल
पीयेअरणायेपीतहीसवहीमुरछायेपीछैश्री
कसनजीसवकुलीयेजीवाय॥नीरमलआति
करुपटराणीछटेकधमपरआय॥तीरतही
जमुनाजुहाली॥वसतहोजमुनामकाली॥ ॥
नाथकरत्यायेवनमाली॥२॥पोहच्यपाना

गनकन्नागौनागतेरासोवइकजागौ॥लुष्यो
क्कुकीणरोनयलाा॥जुषहमन्नायेनुनन्नागौं
योमनमैगरन्योघुणकादुजमनाबारा॥ना
गनसुनतन्नसतन्नही॥मैंचुषकोनाहीवी
चारंजगा॥वतन्नरताकुचाली॥वसतहोजम
नामैंकाली॥नाथकरल्पायेवनमाली॥२
नासुनागनयुवोलीडीडयेकवालकया
फोली॥पलकजबकालीनषोलील

येवनमाली॥५॥जोडकरनाथनकवायक
नाथतुमदुसटनजपदायकज्ञोडदयोदीन
कोसायकोआपयोनाईवहलायकतुमकर
तासंसारेहमज्यूनमैंनाथजाचुदीनजातक
नारीवकसोमोहसुवाथसरणआवतुमरी
हमआली॥वसतहोजमनांमकाली॥नाथ
करल्यायेवनमाली॥६॥दयाजबनाथकी
धारी॥सरवसुषकंपनमैंनारीतजोहकर

णाकरणाधारी॥वीधाकरकालीकीसार
वीसहोजलकसरहैयाहम्रआतहोसञ
बतुमञयो॥रुडोकोनाहीजावोअपणे
सकरोयाजमाामकाली॥वसनहोजम
नामकाली॥नाथकरल्यायेवनमाली॥
पुंजहरकालीसुषआयोदोसकाअसंत
पायो॥कुटवलेअपणेघरध्यायोआण
लवजजीनसुषपायो॥पीरदावानलपा

करदीनीव्रजआनंद॥ गोगाधनीरबहोक
लीकरकीरपागोव्यंदगायोन्नयकरपाजी
नपाली॥ बहोजमनामैंनाथकरल्यायेव
नमाली॥ इतिश्रीनागलीलासंपूर्णं॥ श्री॥
अथचीरलीलालिष्यते॥ कष्नउडजमा
नाहट आयेचीरकदमनपाध्याये॥ गोपी
काबाहरसबकमनआई पीरसुघघर ॥
कीवल्याईजावतदेषीगोपीकावोलेकष

नमुरारस्नसमतुमभावटकोगीवद्धनसु
नोप्युनारगोपीकामनमैंजहल्पाये॥ऋस
नउडजमनामैतटऋाये॥चीरलेकदमन
पधाये॥१॥धमाधमजमनामटाकीकाडसी
रकदमनकुजाकी॥मुकडमलऋपणेतनछा
कीलाजकुमोवतहमाही॥चीरहमारैदी
जियेवोलीसबव्रजवालउदमवोहोतसहये
हतुमरैयाकाईल्यायेचालवचनसुनमोहन

आनंदउरछाये॥कृस्नउडजमनातटआये॥
चीरलेकदमनपछाये॥७॥कदमसकृस्नउत
रचाले:वचनसवगोपीनकेपाले॥सरदकी
पुन्यूआफालेकामनापुरीव्रजवालेधनध
सवगोपीकारमीकृस्नकीसात॥गंगाधरवप
रनवपावैसहसमसहसमुखगातनावसुमुकत
पछीगाये॥कृसनउटजमनातटआये॥चीर
लेकदमनपछाये॥८॥इतिश्रीचीरलीला

संपूर्ण॥श्री॥ ॥श्री॥ श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥

॥अथवछहरणलीलालिख्यते॥ ॥स्नेहस

रमाको॥ सोपावपीसतायोहाल्यो॥येकद

नुबछरनकुलीना॥ ॥वननुडबनमाहीव

ना॥वाछरा चरणछोटदीना: आपमनलोः

नकाकीना॥ लोजनपावतहरष जीलेगुवा

लकुपास॥ घाटोमीप्कोनकोदेष॥ ॥येकये

दौग्रासवचनयुमुखसुनचाह्यो॥ ॥स्नेह

षरकरध्यानज्ञान।येमनमयेव्रह्माकेक
।तसब्रनुनकोवीसतासो।रन्नहरव्रह्म
।रतौ॥पावपडपीसतापोहारतै।४।वन
जमाकेतहसैंजरतकोकापररंगपसेरग
टीकासीरकसे॥गवनसेबछरामीले।मी
गोपीकागुवालनुम।पाप्रेमत्र्प्रोरदीनव
देषत्र्प्रापनबालकाज।नुगोपीनकोस
।रन्नहरव्रह्माकोगतौ॥पावपडपीसत

हास्तौ॥५॥वोरहीवनमलेजावै।साऊकुलुटे
घरल्यावैगुवालमातासुवतलावै॥यादृदोव
रसनकील्यावै।आतजातक्रीडाकरवीतोस
मतयेका।मायासुवाय:आपब्रह्माजी:कस्मं
उलीदेषकणोतबकमलासननास्तौ॥७॥र
नहरब्रह्माकोमास्तोपूवपडपीसतयोहास्तौ
ासोचतबब्रह्माकुलाभयोदेषवाआपनेघर
ामयौ॥८॥नहमब्रह्मापणनायौतेजतोमुष

घरकरध्यानजानगयेमनमयेब्रह्माकेकामज
गतसबजुनकोवीसतासेो॥रत्नहरब्रह्माको
गतेो॥पावपडपीसतापोहारेो॥४॥वनाये
जमाकेतहसैंजरतकोकापररंगपसेरगतस
टीकासीरकसे॥गवनसेबछरामीलेोमीले
गोपीकागुवालनुम॥पाप्रेमऔरदीनवादु
देषआपनबालकाजगनुगोपीनकोसारे
गरत्नहरब्रह्माकोगरेो॥पावपडपीसताप

हातै॥५॥वोरहीवनमलेजावै।साऊकुलुटे
घरल्यावैगुवालमातासुवतलावै॥याद्दोव
रसनकीलावै।आतजातक्रीडाकरवीतोस
मतयेका।मायासुवाय:आपब्रह्माजी:हम्रमे
उलीदेषक पोतबकमलासन नातै॥८र
महरब्रह्माकोगातौपुावपुडपीसतषे
द।सोचतबब्रह्माकुल. . .
नाग्यो॥मा:हमब्रह्मापणनाग्योतेज

कोसब्बनागपोआपसमालीवीरजयाली
लाग्रपरमैंनुपपजीतनागुवालवछ्ड्राजी
तनादेमच्चनुस्नुजरुपसकलमुषझ्ल्नाईक
नास्तो॥४॥ रनहरव्रस्नाको॥ रौ॥पावेपउमीस
तायोहासौ॥५॥देषयावीरमामनटरीयोक
देषयामेरोचीतफीरयो:गुवाललेबछरापद
परीयो:नाथमोयेचुकमाफकरीयो:ग्रपाले
व्रस्नाकोगयोव्रतलोकमाही॥६॥ छ्र व्रस्न

कोजीनुकुारन्नसुवायोन्माय॥ ॥रन्नह
रमाकोहातौ॥पावपडपीसतायोहारौ॥
इति श्री[illegible]व[illegible]रह[illegible]लीला संपूर्ण॥ श्री॥
अथराजेडमुषलीलालिष्यते॥ ॥रानराज
गलीनुबरचीतपूर्वलोकीनुसमऊराजहरर
रणलीनोदीनहेलीलाफेरदीनोंअबमेरो
नोजनकरैपूर्वदीनोसराफअसोजबरहीन
बलमतोसुनकौनबीनआपनहीयोतुमसे

१०

सेतीटरताअरजमेरीसुनहोजाकरत
सरणतुमरीबहहरता॥२॥सुनीहरकु
रकीटेरी॥सुनतहीनुठवाबेरी॥फरम
चतुवोरनफेरी॥तुराजनदीननकेनेरी
गुडआदीकरआईयो॥आयेआपवी
राजजीतनोबेगतीहारेजीतनोहमदी
वोआजि॥बचनयोमुखसुनचरता॥अ
जमेरीसुनहोजाकरता॥सरणमतमरी

हरता॥२॥ गुडमनत्र्यानेदन्त्र्यतत्र्यापो॥व
चनयुजह्नदीफुरा॥यो॥घातनवलजीतनुक
रध्याया॥वो॥मनदसदसगुणध्यापोत्वाले
ऊबपधनहलीवा॥गुरनक्सीतास॥नुग्रले
फाडनोमनुतरवरफेरताफीरत्र्यकास
जोमुल्यामुकायन्नफीरता॥त्र्यरताेरीसु
नहेजगता॥मरणमनुमरीनयहरता॥२॥
लवनहरत्र्यसहनना॥सा॥गुडकोंघीगे

रसकरतातजमहरता॥अरजमेरीसुणहो
जगाकरता॥तरणमतुमरीजयहरता॥६॥
पारसतनबमारग॥आयेविमाणजिनबटनकु
ल्यायो॥हीरमणमुकताछबिछाये॥हुकमह
रकीनोबटाये॥देवसंगदेवागनासोना॥अप
रमपार॥झजबिजदोउकीपोलिया मिलैना
थदुवारसरणकीआसीजनरता॥अरजमे ए
रीसुनहोजगाकरता॥[illegible]ारणमतुमरीजयह

रता॥७॥जो॥ता॥मा॥घननाकीनी॥सर
कदुषकबसलीनीलदीनतमकरण
तीऋषिका॥तजो॥नसुदीनी॥मुकतव
ना॥कीयेकनावकता॥प॥ं॥मा॥घरदस
हीतकुचरणनदोडेऋापवजतनरवा
रता॥ऋरज मेरी सुणहो जगकरता॥
तुमरीजयहरता॥८॥ श्री॥

माधोजीथारीगतःअपरमपार॥प्रथमजल
अरेनोमआरीमेस परपोडेगीरधारीःताह
कोतुन्हीधानरनारीःप्रतुतुमधरेमछअव
तार॥१॥अयोचतुरानेनब्रमचारीःतुननपा
यान्हीपारीःसकलकरमायाबीसनारीःप्र
तुतुमधरौकछअवतार॥ माधोजीथारी
गतअपरमपार॥२॥अयोयेकरात्तसमाह
आरीतुननपयान्हीपारीःसकलकरमाया

वीसतारी॥प्रनुपथ्वीलीनीडापधारी॥माथे
जीथारी॥तन्नपरमपारा॥३॥नयोन्हीरणा
तन्नथकारी॥दीयोदुषप्रलादकुन्नारी॥हे
पलीयेथ॥वडेन्नारी॥प्रनुतुमग्र॥डेनी
संघष्रमपाड॥प्रनुतुमग्र॥डेवावनन्नोव
न्नवतारी॥माथेजीथारी॥तन्नपरमपा
पा॥न्नासस्त्रीप्रथमीकरलीनीःघ्ररमक
लीपरकुदीनीपीताकीन्नापा॥न

माधोजीथारीगतःअपरमपार॥प्रथमजल
नरेनोमत्सारीसेसपरपोडेगीरधारीःताह
कोतुन्हीथानरनारीःप्रनुतुमथरेमछअ
तार॥२॥नयोचतुरानैनव्रमचारीःनुननप
यान्हीपारीःसकलकरमाध्यावीसतारीःप्र
नुतुमधरौकछअवतार॥माधोजीथारी
गतअपरमपार॥२॥नयोपेकराद्बसमाह ए
जारी।नुननपयान्हीपारीःसकलकरमाय

वीसतारी॥प्रभुप्रच्छीलीनीडापधारी॥म॥
जीथारी॥तत्रपरमपारा॥श॥नयोन्हीरप्रभु
सत्रप्रधकारी॥दीयोदुखप्रलादकुनारी॥ह
थलीयेप्रभु॥वडेभारी॥प्रभुतुमप्रगाडेनी
संघप्रमपाडा॥प्रभुतुमप्रगाडेवावनत्रोद
॥अवतारी॥म॥धोजीथारी॥तत्रपरमपा
॥प॥नासहत्रीप्रथमीकरलीनीःप्रशमक
ीपरकूदीनी

अथनागककोत्तिमते॥गोरीनंदगणेसको
धरुहीयामेध्यान:दुरगादेवीसुरसतीवर
मागुसुमपान॥ककाकसनदयालकील
ला॥अपरमपारसेससमुमचतुरननवर
णतवरणतहार॥१॥ममामेलतगुवाल
सगांदध्यालगोपालगुडतोजापडोजम
नामेततकाल॥२॥गंगागुवालायोकहीवि १८
गडयोहरध्याल॥जोजात्यावोगंदकुतोजा

नंदलाल॥३॥घघाघरकहूज्योमतिमजातु
रहकमाही॥सोनवावानंदकीरीझोझा
उनाय॥४॥ननानीरखतगुवालसंगछडेक
दमपरजाय॥नटज्योधमरुकोरकपडतनी
रधराय॥५॥चचाचालेमसजीफाडतफा
डतनीरा॥जाहापोनउडावतनाानीसोव
तनाा३मीरा॥६॥छाछाछलछमनोकेस
नजी॥नाानन्नीरखलुनायहारटोरदोरव

अथनागकोलिषते॥ गोरीनंदगणेसको
धरुहीयामैध्यान: दुरगादेवीसुरसतीवर
मागुसुमपान॥ ककाकसतदयालकीलि
लाअपरमपारसेससमुमचतुरननवर
णतवरणतहार॥१॥ षषाछेलतगुवाल
संगांदग्वालगोपालगुडतोजापड्योजम
नामैततकाल॥२॥ गांगागुवालायोकहीवि
गड्योहरग्वाल॥ जोजात्यावोगंदकुतोजा

...॥३॥घघाघरकहृज्योमतिप्रजान
दहकमाही॥सोतनवावानेदकीरी[illegible]ोग्मा
नुनाय॥धाननानीरमतगुवालसंगछडेल
दमपरज्ञाय॥नटज्योमतकोरकपडतनी
रथराय॥पा॥चचाचालेमसजीफाडतफा
उतनीरा॥जाहपोनवडावतना
तना॥तुमीरा॥द्वा॥छा॥छा॥छल
ग्जी॥ना॥ननीरमतुनाय

नकोलेवालकघरजाय॥७॥जजाजवयो
वोलेक्ठसनजीहारटोरनहीचाय॥मस्त॥
न्दुथारापीवकोनाानवोजााय॥८॥
ऊफाजुडजवोलहतेरकालरहयोसीर
ाजा॥नााजसुतोनीमजाातजासीवाज
ण॥न्नानााानवरजयोवीदवीदसुसम
जाय॥दईताफजानााकसुतोलीयोज
ाय॥१०॥टटाटेकजनाथजीदीयोका

लसीरहाथ॥सरपडनडुग्रौजोरकरचलो
कसनकीसात॥१॥टगगडेकसनजी
कालीग्रावतजात॥मुरमुकाडीकसन
पा॥जुवालाग्रंग॥समान॥२॥नादरमा
मोनहीईमरतमुखवरसाय॥ग्रानतुजा
ईपलकमकालीगरजनवाया॥३॥टदा
टरयोनाजवग्रपणमनमाही॥दो
तोवालकगुनवदोकहजनटेमो
॥२

॥ण॥रणकालीमचोभलीईकोनसुवे
सीसनुडालराचल्योदईकसनचरपेड
१५॥ततातबकालीलोपड्यो॥लईश्रव
लनुपाय॥नागसकलपड्योकसनचर
पुछसीरल्पाय॥१६॥ष्यथाघरहरकाप
घरतरीनंदगावमैंजाय॥नरवावातर
जीवनासुगनलईदुखजाय॥१७॥ददाघ
ड्यो॥नारजबनंदजसोधामाय॥लाला

नाकरतहपडतमुरछामापा॥१८॥
जनाथरजलजमनाकीतीरा॥न
वहवकतेजरत्नीरमुनीरा॥१९॥
जनुडगयोपुछीगुवालवुलाया॥
हैमहाधीनहोयड्रोकदमजलज
पाफ्नुजानगयेमेरेमातपितामु
नीदेहनदध्यदहरकालीदीयोव
॥फफाफीरफणपछडेनाथघाल

जराय॥जलजमनाकुचीरकैदरसनदीनो
आय॥२२॥ववाववानंदकहरकजसोभा
माय॥वीरजबासीनुडेसकलदीपेप्राणदे
आय॥२३॥ननानलोनाचफणपकरैरीम
जीमपावैनुडाय॥देमअकेलीकसतकुमु
षरदीयेफडाय॥२४॥ममामुममुरलीबजै
देवपोपबरासाय॥वृीजवासीकुरआरती
तडजमनाकीतीरआय॥२५॥यायायायाया

वीदनीरतकरत्रीजवासीवललेत॥ जोप
उटनाकोफाकटोकरदेत॥२६॥ररारका
नाकपडनाकमुखमाही॥लडवाचालपो
रकरजीवतछोडनाय॥२७॥ललालापो
गदुखनानकरतफुकार॥पीतबीनक्षीव
ससतरीप्रभुमागोदपसार॥२८॥वावा
कोउकहहरजानाग्रनलेजाय॥नानाना
वालसबजावोदेससीदाय॥२९॥ससासद

जानेनागानमकरीकोणपरीस॥रतनकु
डावोहराळचंदनरच्योसीस॥२०॥घघा
घुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाय।
कसरुपहीरदखनौहनैरुपघरजाय॥२१॥
ससासबसुत्र्यामिलेनरनारीमावावांद
गुडाई॥सगानपचलेगावकुत्र्याय॥२२॥
हाहाहरकसबत्रीजमघोगावमाळाचा
रात्तरत्तरमोतीथाळमवाडतडोळनारी

२३॥ग्रथप्रभुसीजनंदकीबीदनाव
वषान॥नत्रमोत्तिकघोघकीकर
नकुदान॥२४॥नीतप्रीतवाचजोस
चीतप्रीतसहेत॥॥॥प्ररजीहीनजी
नहीना॥दुषदेत॥इतिश्रीना॥कवं
पूर्ण॥

जानेनागानमकरीकोणपरीसा।रतनकु
डावोहरणलचंदनरग्गोसीस॥२७॥घघा
घुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाय।
कुसरुपहीरदखत्तोहनैरुपघरजाय॥२१॥
ससासवसुञ्चामिलेनरनारीमावावांद
गुडाई॥सगानपचलेगावकुञ्चाय॥२२॥
हाहाहरकसवङ्गीजमयोगावमालाचा ९०
रात्तरत्तरमोतीथालमवाडतडोलनारी

३३॥ समासुमीजनंदकीलीदनाम्फरत
वषान॥तुम्समोलिकघोयकी कु रहीपर
नकुदान॥३४॥नीतप्रीतबान्हजोपुनैमन
चीतप्रीतसहेत॥ गं॥ सुरजनीहिजनजोपर
नहीना॥दुमदेत॥इतिश्रीनागनःजोम

जानेनागानमकरीकोणपरीसारतनऊ
डावोहरालचंदनरच्योसीस॥३०॥षषा
सुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाय॥
रूसरुपहीरदधन्नौहन्नैरुपघरजाय॥३१॥
ससासवसुन्नामिलेनरनारीमावावांद
गुडाई॥सगानपचलेगावकुन्नाय॥३२॥
हाहाहरकसवडीजमयोगावमगलाचा १०
रालरलरमोतीथालमवाडतडोलनारी

२३॥षषाप्रुसीजनेदक्षीबीरनाक्ररत
वषाना॥नग्रमोलिकघोघवीन्हरनी॥
नकुरान॥२४॥नीतप्रीतवानजोराजे॥
चीतप्रीतसहेत॥ं॥धरजीरीनजोनत
नहीना॥दुषदेत॥इतिश्रीनाननजोरा
पूर्ण॥